

सरना कोड

चर्चा में क्यों?

झारखंड स्थिति राष्ट्रीय आदवासी धर्म समन्वय समिति ने देशभर के [अनुसूचित जनजात संघों](#) से आगामी [जनगणना](#) में अलग [सरना धर्म कोड](#) की मांग को लेकर वरिध प्रदर्शन में शामिल होने का आग्रह किया है।

मुख्य बटु

- **जंतर-मंतर पर वरिध प्रदर्शन:**
 - राष्ट्रीय आदवासी समन्वय समिति 28 फरवरी, 2025 को नई दल्ली के [जंतर-मंतर](#) पर एक बडे प्रदर्शन का नेतृत्व करेगी, जसमें जनगणना में [अनुसूचित जनजात समुदायों के लिये एक अलग धर्म कॉलम की मांग](#) की जाएगी।
 - वरिध का आह्वान [केंद्रीय सरना समिति](#) सहित अन्य [आदवासी समूहों के बीच भी प्रसारित किया गया है](#), जन्होंने अलग सरना धर्म कोड की मांग पर ज़ोर दिया है।
 - **मुख्य रूप से झारखंड, ओडशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल** के आदवासी संगठन दशकों से जनगणना में धर्म के लिये अलग कॉलम की मांग कर रहे हैं।
- **2011 की जनगणना में आंदोलन का प्रभाव:**
 - [2011 की जनगणना](#) में इस आंदोलन के कारण 4.9 लाख लोगों ने 'अन्य' कॉलम में अपना धर्म सरना अंकित किया।
 - इनमें से 80% से अधिक उत्तरदाता झारखंड से थे, जससे इस मांग के प्रति प्रबल क्षेत्रीय समर्थन उजागर होता है।
 - वर्ष 2011 के पश्चात, वशिष रूप से पूर्वी और मध्य भारत में आदवासी समुदायों की बढ़ती एकजुटता के साथ, अलग सरना धर्म कोड की मांग ने महत्त्वपूर्ण रूप से गति प्राप्त की है।

सरना धर्म

- **परचिय:**
 - सरना धर्म एक प्रकृत-पूजक वशिवास है, जसि भारत के कई जनजातीय समुदायों द्वारा अपनाया गया है। इसे **सरना धर्म या पवतिर वनों का धर्म** भी कहा जाता है।
 - वे मुख्य रूप से ओडशा, झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम जैसे आदवासी क्षेत्रों में केंद्रित हैं।
- **सरना धर्म की वशिषताएँ:**
 - वे जल, वन और ज़मीन सहित प्रकृत की पूजा करते हैं।
 - वे वनों की रक्षा में वशिवास रखते हैं और पेड़ों और पहाड़ों की पूजा करते हैं। वे **मूर्तियों की पूजा नहीं करते**।
 - वे वर्ण व्यवस्था का पालन नहीं करते हैं।
 - वे सरहुल त्योहार मनाते हैं, जो नए साल का त्योहार है।